22130095

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI A: LITERATURE – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A : LITTÉRATURE – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A: LITERATURA – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Wednesday 8 May 2013 (morning)
Mercredi 8 mai 2013 (matin)
Miércoles 8 de mayo de 2013 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a guided literary analysis on one passage only. In your answer you must address both of the guiding questions provided.
- The maximum mark for this examination paper is *[20 marks]*.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez une analyse littéraire dirigée d'un seul des passages. Les deux questions d'orientation fournies doivent être traitées dans votre réponse.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est *[20 points]*.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un análisis literario guiado sobre un solo pasaje. Debe abordar las dos preguntas de orientación en su respuesta.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es *[20 puntos]*.

© International Baccalaureate Organization 2013

https://xtremepape.rs/

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी ***एक*** *पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए। अपने उत्तर में आप दिए गए दोनों प्रश्नों का समावेश करें।*

1.

“तिवारी, पानी डाल।” डी.जी.एम नरोत्तम सरोज की भारी आवाज, बाहर स्टूल पर बैठे रामनारायण तिवारी के पेट में पारे की तरह उतरती चली गई। “नीच ! उम्र का भी कोई लिहाज नहीं करता।मुझसे कुछ नहीं तो बारह साल का छोटा होगा। कोटे से बन गया अफसर तो टेढ़ा-टेढ़ा तो चलेगा ही।कोटा नहीं होता तो कहीं झाड़ू लगा रहा होता।” वह भुनभुनाते हुए तेजी से कमरे में घुसा।दिल्ली के अक्तूबर की इस सुहावनी ठण्ड में भी तिवारी को गर्मी महसूस हुई थी। “यस सर।” कह तो गया तिवारी, पर कहते हुए उसकी जैसे जीभ छिल गई।उसे लगता कि कोई उसे गहरे कुएँ में डुबोता जा रहा है। वह खुद को समझाता रहता कि कुछ दिन बाद नरोत्तम का तबादला हो जाएगा।रोज सुबह तिवारी को पूजा करने की आदत अपने परिवार से मिली थी जिसे वह “संस्कार”मानता था। रोज पूजा करते वक्त नरोत्तम के तबादले की प्रार्थना करता। “अब वहीं खड़ा रहेगा, इसमें पानी भर।” नरोत्तम बिना ऑख उठाए अपना काम करता रहा। “तुमने देखा है कभी आर. ओ. सिस्टम, तिवारी, हमारे यहॉ कई सालों से है।”नरोत्तम ने तो कहा तो तिवारी सुलग गया, उसके अहंकार से।अच्छा बता तिवारी आर. ओ. का क्या मतलब होता है ? नरोत्तम ने फाइल पर लिखना बंद कर दिया और गाढ़ी नज़र से उसकी ऑखों में झॉका।“आर. ओ. का मतलब एक तरह का एक्वागार्ड सर।” वह दिखा देना चाहता था कि वह कोई मिट्टी का माधो नहीं है।बस तुम लोगों में यही कमी है ...गधे घोड़े सब बराबर।अरे बेवकूफ, एक्वागार्ड तो कम्पनी का नाम है।पानी साफ करने वाली मशीन और आर. ओ. सिस्टम तो दो अलग चीजे हैं।यह कहते हुए नरोत्तम अपनी आदत के विपरीत कुछ मुस्करा गया।मुस्करा तो तिवारी भी जाता, पर उसकी छाती में नरोत्तम का कहा “बेवकूफ”शूल की तरह गड़ गया था। रामनारायण तिवारी ने अपनी जिंदगी के शुरूआती अठारह साल अपने गॉव में बिताए थे।उसके पिता पण्डित शिवनारायण तिवारी की कभी आस-पास के दस गॉवों में जजमानी थी।वह जब भी गॉव जाता तो भूल ही जाता कि वह भारत सरकार के एक सार्वजनिक उपकम में चपरासी है।गॉव के बस अड्डे पर उतरते ही उसका सत्कार शुरू हो जाता था।गॉव तो यहॉ से लगभग एक किलोमीटर दूर था, पर तेज धूप में भी यह दूरी मीठी लगती थी।हर दस कदम पर, कोई आदमी या औरत, रामा-श्यामा करता था या पैर छू लेता था।गॉव में आज तक नहीं बताया था कि वह दिल्ली में चपरासी के पद पर है। उसे कोई हक नहीं कि वह गॉव के लोगों के इस भोले विश्वास को तोड़ें कि उनके गॉव के आदरणीय ब्राह्मण देवता शहर में अपने अफसरों के जूठे बर्तन धोता है। ।“आर. ओ. यानि रिवर्स ऑस्मोसिस सिस्टम।” नरोत्तम ने कहा तो तिवारी का मुँह खुल गया, ऑखें सिकुड़ गई और माथे पर सलवटें आ गई। “अच्छा छोड़, तू कॉफी डाल और जा।” “यस सर।” तिवारी के स्वर में अदब था।कुछ जान छुटने का भाव भी।तिवारी कुछ चुस्त कदमों से नरोत्तम सुमन के कमरे के सामने पहुँच गया। उसने घड़ी देखी।बारह दस।दस मिनट ऊपर हो गए, कॉफी देने में नीच जरूर डॉट लगाएगा।सोचते-सोचते उसने अपनी कमीज की आस्तीनों को खोल कर, कलाई तक लाकर बटन लगाए। “हॉ , जरा ए. सी. देख, कितने पर है।” “साहब बाइस पर है।” “अठाइस पर कर दे, हर काम पूछ करेगा क्या ?”उसकी नज़रें अब भी कम्प्यूटर पर गड़ी हुई थीं। “बाप न मारी मेंढकी, बेटा तीरंदाज।” तिवारी को जितनी गालियॉ याद थीं उसने मन-ही-मन सब दे डालीं।उसे बेतहाशा पहलेवाला डी.जी.एम मनोहर पटेल याद आया।मनोहर पटेल कभी तिवारी को नाम से नहीं पुकारता था।अपने जूठे बर्तन धुलवाना तो दूर वह उससे पानी पिलाने को भी नहीं कहता था।

“ले तिवारी ।”नरोत्तम की तरफ तिवारी की नज़रें उठी थीं।उस हाथ में दो कागज थे। हाथ की दिशा तिवारी की तरफ थी और निगाहें अब भी कम्प्यूटर पर गड़ी हुई थीं।हालॉकि कागज़ों की लिखावट अंग्रेजी थी, पर मतलब की बात हो तो लिखावट चीनी भाषा में भी समझी जा सकती है।वह जोर से चिल्लाना चाहता था, पर चिल्ला न सका। “आपकी मेहरबानी सर, आप जुग-जुग जिओ सर, आपकी पद-प्रतिष्ठा और बढ़े। “खुश है तू ?” तिवारी की ऑखों में “तू” सुनकर भी कृतज्ञता झिलमिला रही थी।“एक दम भगवान राम जैसे दिखते हो आप सर।कितने पैसे बढ़ जाएंगे ? “लगभग दो हजार।” उसने लगभग हर केबिन में जाकर अपना पत्र दिखाया।फिर उसने फोन करके पत्नी को ही नहीं

https://xtremepape.rs/

बल्कि साले, जीजा, भाई, भौजाई, मौसा-मौसी सबको एक-एक करके उनका हाल चाल पूछते हुए अंत में इसकी सूचना भी सहज ढंग से दे दी। “तिवारी ! जा जरा स्वीपर को बुला ला।”अब न यह आवाज उसे चुभी और न ही कोई घबराहट सरसराई। उसने एक कमरे से दूसरे कमरे और फिर एक तल से दूसरे तल तक, सभी संभावित जगहों पर स्वीपर को ढूँढ़ा, पर वह नहीं मिला।तिवारी समझ गया कि लायकराम दफ्तर में नहीं है। “साहब, न कहीं लायकराम है और न दुर्गादास।” “ठीक है तू जा।कल लायकराम को कह देना।” “मैं करता हूँ न सर। आप नाहक परेशान होंगे।” “तुम ?” नरोत्तम की नज़रें पहली बार तिवारी की नज़रों से मिली।अनपेक्षित ढ़ग से इस प्रश्न में आश्चर्य आदर और अकबकापन था। “क्यों सर, क्या हमारे घर में बाथरूम बंद नहीं होता ? बस दो डंडे मारता हूँ, सब ठीक।” कहते हुए तिवारी टॉयलेट में घुस गया।टॉयलेट से घर घुऽऽर्र घर घुऽऽर्र की आवाज़ें आने लगी। “काम में क्या शर्म, सर।” तिवारी की आवाज इन्हीं आवाज़ों के बीच बाहर आई।

अजय नावरिया, यस सर, *श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ*, जनवरी (२०१०)

(अ) कहानी में प्रस्तुत पात्रों की मनःस्थिति और परिस्थिति के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

(ब) लेखक द्वारा कथा प्रसंग का वर्णन एवं इसके प्रभाव के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?

https://xtremepape.rs/

2.

लोकगीत बन जाना चाहती हूँ

तुम रहते हो गुस्से की आग में मेरे सजना,
पर मैं बन जाना चाहती हूँ ,ठंढे, मीठे पानी का झरना,
तुम चाहते हो मेरे माथे पर बिन्दी टॉकना
मैं आकाश में नक्षत्र बनना चाहती हूँ
और पैरों में छनक-छनक बजती पाायल
मैं गुलामी की हथकड़ी, पैरों की बेड़ियॉं
तोड़ना चाहती हूँ , तुम भरना चाहते हो -
मेरी सूनी मॉंग में लाल सिन्दूर
मैं सूनी दुनियॉं के कैनवास में खूबसूरत
रंग भरना चाहती हूँ।तुम जनना चाहते हो
मुझसे बच्चे
मैं पूरी दुनियॉं के अनाथ बच्चे अपनाना चाहती हूँ।
तुम भरना चाहते हो मुझे अपनी बॉंहों में
मैं अपनी बॉंहों में दुनिया का दर्द समेटना चाहती हूँ
तुम मेरे ऑंचल में लाना चाहते हो चॉंद-सितारे
मैं चॉंद-सितारा बनना चाहती हूँ।
तुम मेरे करीब आना चाहते हो - मैं रिश्ते को
खूबसूरत मोड़ देकर वापस मुड़ जाना चाहती हूँ।
तुम चाहते हो कि मैं गीत गुनगुनाऊँ - मैं
लोकगीत बन जाना चाहती हूँ।
तुम तो मेरे कृष्ण नहीं हो -पर मैं
मीरा बन जाना चाहती हूँ।
मैं पूरी दुनियॉं में
प्रेम की खुशबू बिखेरना चाहती हूँ
मैं सबकी बनना चाहती हूँ
इतना ही अन्तर है कि शायद इसीलिए तुम्हें
जीने की तमन्ना है और
मैं मर जाना चाहती हूँ ।

विजय लक्ष्मी, *उत्तरा*, जुलाई (२००६)

(अ) कविता का केन्द्रीय भाव क्या है और यहाँ कवि मानव जीवन के किस पक्ष को उजागर कर रहा है ?

(ब) नारी की आवाज एवं उसकी चाहत को कविता में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है ?

https://xtremepape.rs/